प्रवचन

परम हंस श्री हंसानंदजी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 19 * AUG@1 : 2008 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	01.08.08	46				गीता- संक्षेप में अ० १५ + सृष्टिक्रम एवं लय	
2	02.08.08	26				ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैव न परा	a
3	03.08.08	43				गीता- अ० २/३०-३८	1
4	04.08.08	31				भगवान जगत के निमित्तोपादानकारण	
5	05.08.08	32				देह के धर्म - सभी कर्म प्रकृति व उसके कार्यों इ०म०बु०प्राणों में ही हैं, आत्मा अकर्म है-यही ज्ञान है	
6	06.08.08	45				ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैव न परा । जल तरंग दृष्टान्त	b
7	07.08.08	33				ब्रह्म माया एवं उपनिषदों द्वारा सृष्टिक्रम निरूपण	
8	08.08.08	50				गीता- अ० २/१६-१८ नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः	Imp
9	09.08.08	44				कर्म योग	
10	10.08.08	28				निद्रा माया की शक्ति । माया के पर्याय -निद्रा,अविद्या, अव्याकृत, त्रिगुणात्मिका	1
11	11.08.08	35				गीता- अ० २/४७-५३ 'कर्म योग' एवं २/५४-५५ 'स्थितप्रज्ञ के लक्षण'	1
12	12.08.08	28				ब्रह्म और माया का स्वरूप निरूपण, ईश्वर एवं जीव की सृष्टि, 'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैव ना परा'	2
13	13.08.08	41				स्थितप्रज्ञ के लक्षण	2
14	14.08.08	32				चार कृपाऐं	
15	15.08.08	56				कर्म-उपासना-ज्ञान एवं ओंकार - माण्डूक्य उप० :: ब्रह्म का नि० नि०स्वरूप निरूपण	A
16	16.08.08	47				गीता- अ० २/५५-७२ ब्रह्म में समाधि, स्थितप्रज्ञ के लक्षण	3
17	17.08.08	46				अनादि के प्रकार एवं चिदाभास की ७ अवस्थाऐं	
18	18.08.08	31				गीता ज्ञान ही महान अमृत है	
19	19.08.08	53				श्रेय-नित्य एवं प्रेय-आभाससुख निरूपण कर्मयोग अज्ञानियों को ही अभीष्ठ है	
20	20.08.08	30				वेद के चार प्रकार	
21	21.08.08	60				निद्रा कारण-प्रकृति तथा स्व०जा० कार्य-प्रकृति है पंचकोष विवेक	
22	22.08.08	48				पॉच उपनिषदों द्वारा जगत उत्पत्ति क्रम निरूपण	
23	23.08.08	19				ब्रह्म माया एवं सृष्टि तीन गुण और पंच महाभूत नामरूप - बस इतनी ही सृष्टि है	3
24	24.08.08	68				अर्जुन का विषाद	
25	25.08.08	42				ब्रह्म और माया , निद्रा कारण तथा स्वप्न-जागृत कार्य प्रकृति है	4
26	26.08.08	27				निष्काम-कर्म मुक्ति दायक व सकाम-कर्म बन्धनकारक होते हैं	
27	27.08.08	30				ज्ञान-अधिकार प्राप्ति का साधन निष्काम-कर्म ज्ञान प्राप्ति का साधन त्रिकांडमय वेद	
28	28.08.08	NA					NA
29	29.08.08	44				अन्न, मेघ, वेद-महिमा जगत ब्रह्म का विवर्त	
30	30.08.08	32				त्रिकांडमय वेद-कर्मकाण्ड सामान्य कर्म	1
31	31.08.08	37				त्रिकांडमय वेद-कर्मकाण्ड सामान्य कर्म	2
32	32.08.08	45				कर्म-उपासना-ज्ञान से मायाकृत प्रतिबन्धों का नाश स्वरूपज्ञान	
33	33.08.08	29				ओंकार-प्रणव-माया का स्वरूप निरूपण	B
34	34.08.08	42				गीता-अ०३/१७-२८ हमारा स्वरूप सत्-चित्-आनंद, निद्रा-माया का कार्य ये जगत एक सपना है	5
35	35.08.08	32				आध्यात्म रामायण भगवान राम का नि०नि० स्वरूप निरूपण व अद्भुत रामायण प्रसंग	
36	36.08.08	40				ब्रह्म और माया निद्रा कारण-प्रकृति तथा स्वप्न/जागृत कार्य-प्रकृति है	6
37	37.08.08	35				गीता-अ०३/१७-२६ज्ञानोपरान्त जगत एक स्वप्नवत् आभास है ज्ञानी को प्राकृतिक + स्वाभाविक कर्म ही अभीष्ठ हैं	7
38	39.08.08	43				त्रिकांडमय वेद त्रिवेणी हैं	
39	40.08.08	34				गीता- अ०३/२७-३५ तीनगुण व पंचभूतों से तीनों शरीर संरचना ब्रह्म-माया नि०	8
40	41.08.08	30				स्वधर्म ही कल्याणकारी है	
41	42.08.08	29				ओंकार का स्वरूप निरूपण	
42	43.08.08	31				यज्ञ दान तप व निष्कामकर्म की महिमा स्वरूप ज्ञान जगत निद्रा का कार्य	
43	44.08.08	49				सत्यमेवजयते	
44	45.08.08	30				नि०नि०ब्रह्म के सगुण-साकार अवतार का प्रयोजन	